1. कहि ‘ रहीम ’ संपति सगे , बनत बहुत बहु रीति।
   बिपति – कसौटी जे कसे , सोई सांचे मीत॥

कठिन शब्द :-
कहि – कहना
सगे – सगे-संबंधी
बनत – बनना
बहु – सारे , अधिक
रीति – रीति-रिवाज
बिपति – कसौटी – मुसीबत के समय
कसे – काम आना
सोई – वही
सांचे – सच्चा
मीत – मित्र

दोहे का अर्थ – रहीम जी इस दोहे में कहते हैं कि हमारे सगे – संबंधी किसी संपत्ति की तरह होते हैं , क्योंकि संपत्ति भी बहुत कठिन परिश्रम से इकट्ठी की जाती है और सगे – संबंधी भी बहुत सारे रीति – रिवाजों के बाद बनते हैं। परंतु जो व्यक्ति मुसीबत में आपकी सहायता करता है या आपके काम आता है , वही आपका सच्चा मित्र होता है।

2. जाल परे जल जात बहि , तजि मीनन को मोह।
   ‘ रहिमन ’ मछरी नीर को तऊ न छाँड़ति छोह॥

कठिन शब्द :–
बहि – बह जाना
तजि – त्याग करना
मीनन – मछली
मोह – प्यार , प्रेम
मछरी – मछली
नीर – जल , पानी
तऊ – तब भी , तथापि
छोह – प्रेम , स्नेह , कृपा , दया

दोहे का अर्थ – इस दोहे में रहीम जी ने एक तरफा प्रेम का वर्णन किया है। रहीम जी के अनुसार , जब किसी नदी में मछली को पकड़ने के लिए जाल डालकर बाहर निकाला जाता है , तो नदी का जल तो उसी समय जाल से बाहर निकल जाता है। उसे मछली से कोई प्रेम नहीं होता इसलिए वह मछली को त्याग देता है। परन्तु, मछली पानी के प्रेम को भूल नहीं पाती है और उसी के वियोग में प्राण त्याग देती है।

3. तरुवर फल नहिं खात है , सरवर पियहि न पान।
   कहि रहीम पर काज हित , संपति सँचहि सुजान॥

कठिन शब्द :-
तरुवर – वृक्ष , पेड़
खात – खाना
सरवर – नदी , तालाब
पियहि – पीना
पान – पानी
काज – कार्य , काम , प्रयोजन
हित – भलाई , उपकार , कल्याण , मंगल
सँचहि – संचित किया हुआ , इकठ्ठा किया हुआ
सुजान – सज्जन , अच्छे व्यक्ति

दोहे का अर्थ – अपने इस दोहे में रहीम जी कहते है कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल खुद नहीं खाते और नदी, तालाब अपना पानी कभी स्वयं नहीं पीते। ठीक उसी प्रकार , सज्जन और अच्छे व्यक्ति अपने द्वारा इकठ्ठे किए गए धन का उपयोग केवल अपने हित के लिए प्रयोग नहीं करते , वो उस धन का दूसरों के भले के लिए भी प्रयोग करते हैं।

4. थोथे बादर क्वार के , ज्यों ' रहीम ' घहरात ।
   धनी पुरुष निर्धन भये , करैं पाछिली बात ॥

कठिन शब्द :-
थोथा –तत्व रहित , निकम्मा , बेढंगा , भद्दा
बादर –बादल
क्वार –अशिवन का महीना
ज्यों – जैसे
घहरात – गरजना
धनी – अमीर
निर्धन –गरीब
भये – हो जाना
करैं –करना
पाछिली – पिछली

दोहे का अर्थ – इस दोहे में रहीम जी कहते है कि जिस प्रकार बारिश और सर्दी के बीच के समय यानि अश्विन महीने में बादल केवल गरजते हैं , बरसते नहीं हैं। उसी प्रकार , कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति अपने पिछले समय की बड़ी – बड़ी बातें करते रहते हैं , जिनका कोई मूल्य नहीं होता है।

5. धरती की सी रीत है , सीत घाम औ मेह ।
   जैसी परे सो सहि रहै , त्यों रहीम यह देह॥

कठिन शब्द :-
रीत – प्रथा , रिवाज , परंपरा
सीत – सहनशक्ति
घाम – सूर्य का प्रकाश , धूप , कष्ट , विपत्ति
मेह – वर्षा , बादल

सहि – सहन करना
त्यों – वैसे
देह – शरीर

दोहे का अर्थ – रहीम जी ने अपने इस दोहे में मनुष्य के शरीर की सहनशीलता का वर्णन किया है। वो कहते हैं कि मनुष्य के शरीर की सहनशक्ति बिल्कुल इस धरती के समान ही है। जिस तरह धरती सर्दी , गर्मी , बरसात आदि सभी मौसम झेल लेती है , ठीक उसी तरह हमारा शरीर भी जीवन के सुख – दुख रूपी हर कष्ट, विपत्ति के मौसम को सहन कर लेता है।

प्रश्न 1. सज्जन और अच्छे व्यक्ति अपने द्वारा इकठ्ठे किए गए धन का उपयोग कैसे करते है?
उत्तर – सज्जन और अच्छे व्यक्ति अपने द्वारा इकठ्ठे किए गए धन का उपयोग केवल अपने हित के लिए प्रयोग नहीं करते बल्कि उस धन का दूसरों के भले के लिए भी प्रयोग करते हैं।

प्रश्न 2. कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति क्या करते है?
उत्तर – कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति अपने पिछले समय की बड़ी – बड़ी बातें करते रहते हैं, जिनका कोई मूल्य नहीं होता है।

प्रश्न 3. मनुष्य के शरीर की सहनशक्ति किसके समान है?
उत्तर – मनुष्य के शरीर की सहनशक्ति बिल्कुल धरती के समान है। जिस तरह धरती सर्दी, गर्मी, बरसात आदि सभी मौसम झेल लेती है, ठीक उसी तरह हमारा शरीर भी जीवन के सुख – दुख रूपी हर कष्ट, विपत्ति के मौसम को सहन कर लेता है।

प्रश्न 4. वृक्ष और सरोवर का उदाहरण देकर रहीम जी क्या समझाना चाहते हैं?
उत्तर – वृक्ष और सरोवर का उदाहरण देकर रहीम जी यह समझाना चाहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल खुद नहीं खाते और नदी, तालाब अपना पानी स्वयं नहीं पीते है उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति अपने द्वारा इकठ्ठे किए गए धन का उपयोग केवल स्वयं पर न खर्च करके बल्कि दूसरों के भले के लिए भी खर्च करता हैं।